सदी से साक्षात्कार
वेदों का ज्ञान पूरी दुनिया तक पहुंचे

(सदी से साक्षात्कार जून जुलाई 2002 में प्रकाशित श्री विश्वमोहन माथुर द्वारा लिया गया साक्षात्कार)

16 अक्टूबर 1946 को जन्मे श्री पी.डी. मिश्रा ने सागर विश्वविद्यालय से एम.ए. अंग्रेजी किया। मिश्राजी 1668–69 में महर्षि महेश योगी के साथ आध्यात्मिक पुनरुत्थान अभियान के सिलसिले में संपूर्ण भारत यात्रा पर निकले। सन 1989 में मध्य एशिया के तजाकिस्तान में भारतीय योग पर सशक्त व्याख्यान दिये। श्री मिश्रा तुलसी मानस, प्रतिष्ठान, श्री सत्य साईं आध्यात्मिक संगठन, म.प्र. लेखक संघ से जुड़े हुए हैं। उनकी प्रकाशित पुस्तकों में सौन्दर्य लहरी काव्यानुवाद, देवात्माशक्ति श्री विष्णु महाराज की कुंडलिनी पावर का हिन्दी अनुवाद, दी गीता फार आल, सबके लिए गीता, मैत्रेयी, उत्तरपथ और वेद की कविता प्रमुख हैं। सहकारिता, साहित्य एवं ज्योतिष में उन्हें समान अधिकार प्राप्त है। वे अत्यंत सहज, सरल, विनम्र और मिलनसार हैं। इस वक्त वे सहकारिता विभाग में अपर पंजीयक का दायित्व संभाल रहे हैं। वेदों के गहरे अध्येता श्री मिश्र ने वेदों पर सरलीकृत भाषा और विचार के माध्यम से बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया है। वे उत्तम श्रेणी के ज्योतिषी भी हैं । ज्योतिष के वैज्ञानिक पक्ष को मजबूत करने के लिए वे कटिबद्ध हैं। अंग्रेजी और हिन्दी भाषाओं पर समानरूप से अधिकार होने के कारण वे अनुवाद बहुत उम्दा करते हैं। संस्कृत पर भी उनकी पकड़ गहरी है, इस कारण वेदों के ज्ञान का वे सरल भाष्य और टीकाएं बेहतर ढंग से कर पाए। डॉ. पी.डी. मिश्रा ने सहकारिता के क्षेत्र में भी अपना रचनात्मक योगदान दिया है । पिछले दिनों हमने उनसे जो बातचीत की उसके प्रमुख अंश पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है ।

मिश्रा जी, लेखन की ओर आपका रुझान कब और कैसे हुआ ?

जब मैं 9वीं कक्षा में पढता था उस समय मैंने गांव पर कविता लिखी थी यह 1960 की बात है । मुझे सूर, मीरा, और कबीर के पद पढने में काफी रुचि थी । मेरे बहनोई साहब बहुत अच्छे कवि थे । उन्हें देखता रहता था । कभी वे लिख रहे है कभी गा रहे हैं । वे बड़े भावुक कवि थे । उन्हें देखकर मुझे प्रेरणा मिलती रहती थी । टीकमगढ़ में कवि सम्मेलन हुआ करते थे । उन्हें मैं देखने सुनने जाता था । जब कवियों की कवितायें सुनता था तो मुझे लगता था कि ऐसी कवितायें तो मैं भी लिख सकता हूँ । इस तरह से काव्य लेखन का सिलसिला शुरू हो गया । जब मैं कालेज में था तो मैंने बी.ए. प्रथम वर्ष में शिवप्रिया खण्ड काव्य लिखा । मेरी फर्स्ट डिवीजन आई । इसी तरह बी.ए. फायनल में यूनिवर्सिटी की मेरिट लिस्ट में आने के लिए मैंने दूसरा खण्ड काव्य लिखा तो विश्वविद्यालय में मेरी दूसरी पोजीशन आई । उस समय मुझे लगा कि कविता एक अनुष्ठान है, एक पूजा है । मेरे साथ तो यह संयोग रहा कि एक कविता लिखी तो हायर सेकेंण्डरी में फर्स्ट आया इसी तरह से दो खण्ड काव्य लिखे तो बी.ए. में दूसरी पोजीशन प्राप्त की ।

अभी तक आपके जो प्रकाशन सामने आये हैं वे प्रायः अनुवाद आधारित है। जैसा कि आपने अभी बताया कि आपने छात्र जीवन में दो खंड काव्य लिखे थे तो हम जानना चाहते है कि उनके प्रकाशन का क्या हुआ ।

शुरूआत में मौलिकता से लिखी हुई कुछ कवितायें भी प्रकाशित हुई । जहां तक खण्ड काव्य का प्रश्न है तो वे जिस आयु में लिखे गये थे वह आयु परिपक्वता की नहीं थी । अतः उनका प्रकाशन सामयिक नहीं है । समय के साथ यदि आपको चलना है तो कुछ ऐसा लिखिए जो आज का तो हो और आने वाले कल का भी हो। पहला खण्ड काव्य मैंने 1963 में लिखा उसकी कुछ पंक्तियां आप भी सुनिये–

कभी क्या सरिता वारि प्रवाह
सिंधु से रखता कोई चाह
प्रेम में फिर कैसा वरदान
समर्पण में क्या मुक्ति सुजान
सुरों की मुक्ति दनुज वध हेतु
धर्म के रक्षण को वृषकेतु
पुनः हरने भू का गुरुभार
पुत्र हो कृपा सिंधु भरतार

इस शिवप्रिया खण्ड काव्य की उपरोक्त पंक्तियां शिव पार्वती संवाद से हैं ।

कोई पुस्तक लिखने की योजना है ?

वेदों पर लिख रहा हूँ । अंग्रेजी की पुस्तक पूरी हो गयी है । हिन्दी की पुस्तक चल रही है । 'वेदास फार आल' के नाम से यह पुस्तक आयेगी । वेदों के बारे में जो भ्रम की स्थिति है उसे मैंने दूर करने का प्रयास किया है । वेदों के ज्ञान को सामान्य कृत करना चाहता हूँ ताकि वेदों के बारे में ज्यादा से ज्यादा लोग जान सके ।

ज्योतिष की ओर रुझान कब हुआ ?

चूंकि ब्राहम्ण के घर जन्म लिया इसलिए घर में ज्योतिष की किताबे थीं । उन्हें पढ़ता था । ज्योतिष की वैज्ञानिकता के बारे में मैंने अध्ययन किया । ईश्वर की एक डिजाइन है । ग्रह हैं, वे अवश्य प्रभाव डालते हीं है । और सब अंततः ये सब ईश्वरीय व्यवस्था के अंग है ।

महर्षि योगी के साथ भी आप कुछ दिन रहे ।उनके बारे में बताइये ।

1968 में मैंने अमरीकन लिटरेचर में पीएचडी के लिये रजिस्ट्रेशन कराया । वहां मेंरी भेंट एक अग्रेज माइकल हावर्ड और सईद अली से हुई । हम तीनों ने महर्षि से भेंट करने की योजना बनाई । उसी समय पंडित परमानंद जी आये । उनका व्याख्यान हुआ । व्याख्यान ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया । व्याख्यान समाप्त होने पर मैं उनसे मिला । पंडित परमानंद जी से मैंने कहा कि हमारा विचार महर्षि योगी जी से मिलने का बन रहा है तो पंडित परमानंद ने कहा मैं वहां चिट्ठी लिख देता हूँ । तुम चले जाओ । उस पत्र को लेकर हम तीनों महर्षि से मिलने गये । दोनों मि़त्र चले आये लेकिन मै रुका रहा । महर्षि जी ने कहा मैं भारत यात्रा के लिये निकल रहा हूँ । मैं चाहता हॅू कि आप भी मेरे साथ रहें । इस तरह मैं उनके प्रवचनों का हिन्दी अनुवाद करता था । प्रेस के लिये समाचार बनाता था । उनकी रचनाओं का अनुवाद भी करता था । उन दिनों मैं भोपाल भी आया था । सेंट्रल इंडिया प्लोर मिल में ठहरा था । बहुत अच्छा कार्यक्रम हुआ था । महर्षि ने कहा आप म.प्र. के है अतः म.प्र. का कार्य देखें कुछ दिनों कार्य किया लेकिन घरवाले चाहते थे मैं वापस घर लौटूं । मैंने महर्षि से आज्ञा ली । महर्षि ने कहा कोई बात नहीं भविष्य में आप जुड़ना चाहे तो स्वागत है । अभी भी मैं महर्षि जी के संपर्क मैं हूँ । महर्षि जी के साथ बिताये गये समय पर मैंने उत्तरपथ शीर्षक से पुस्तक लिखी है । इसमें आध्यात्मिक संस्मरण हैं ।

सहकारिता के क्षेत्र में आना कैसे हुआ ? और इस क्षेत्र में आपके अनुभव क्या रहे?

महर्षि जी से विदा लेकर घर आया । उसी समय मेरा विवाह हो गया । मैं अमेरिकन पीस कोर में काम करने लगा । अमेरिका से कुछ वालेंटियर आते थे । उन्हें भारतीय दर्शन और संस्कृति में प्रशिक्षित किया जाता था । यह प्रशिक्षण शिविर होंशंगाबाद के निकट पोवारखेडा में थ । इसी बीच पी एस सी की परीक्षा दी । मेरा चयन हो गया । सहकारिता के लिए चुने गये लोगों में लिस्ट में मेरा पहला नाम था । सहकारिता में आना शायद पूर्व नियत था । जब मैं यूनिवर्सिटी में पढता था तब सहकारिता पर अंतर्विश्वविद्यालयीन काम्पटीशन हुआ । उसमें मैंने भाग लिया था । उसका सर्टिफिकेट भी था । शायद पीएससी के चयन कर्ताओं ने मुझे इस पद के लिये उचित पाया । अप्रेल 30 1971 में मैं असिंस्टेंट रजिस्ट्रार के पद पर आया । विभाग में 30–31 साल का समय हो गया । समय के साथ ही प्रमोशन भी होते गये । नौकरी के हिसाब से यह विभाग ठीक रहा । सोचने विचारने और लिखने के लिये भी यह विभाग उचित रहा है । इस दौरान मैंने आवास सहकारिता पर एक पुस्तक लिखी जिसका प्रकाशन हो गया । सहकारिता विधान में कॉफी संशोधन हुये। सहकारिता कानून 1999 बना । उसमें में मेरी गहरी हिस्सेदारी रही । उसी पर अब पुस्तक हिन्दी और अग्रेजी में आने वाली है । साहित्य और सहकारिता दोनों पर लिखता रहा । इस संदर्भ में मुझे वृंदावनलाल वर्मा का कथन याद आता है । वे टीकमगढ आये थे । और चित्रगुप्त मंदिर में ठहरे थे । हम उनसे मिलने गये और हमने उनसे पूछा आप इतने महान उपन्यासकार हैं फिर यह वकालत के चक्कर में क्यों पड़े हैं ? पूरी तरह लेखन में क्यों नही लगते ? वर्मा जी ने कहा 'जागीर लगवा दो, हम वकालत छोड देंगे । हमें पता है कि प्रेमचंद निराला कितने कष्ट और अभावों में जिये । आजीविका के लिये कुछ साधन तो होना चाहिये । लेखन के भरोसे जीवन नहीं चल सकता ।'

30–31 साल के दौरान आप सहकारिता क्षेत्र के किस अधिकारी की कार्यशैली और सोच से प्रभावित हुये ?

बहुत नाम याद आते है । विभाग के पंजीयक ओर सचिवों में से श्री नन्दा वल्लभ लोहानी, कौल साहब, शिवराज सिंहजी, गोपाल शरण शुक्लजी, वर्तमान मुख्य सचिव, श्री ए.वी. सिंह जी के साथ मैंने काम किया । मुझे उक्त सभी ने प्रभावित किया । विपणन संघ में सिंह साहब प्रबंध संचालक थे । तीन साल उनके साथ सानंद गुजरे ।

आपकी इस प्रगति में आपकी पत्नी का क्या योगदान आप मानते है ।

तटस्थ हैं ।

आदर्श ।

आराध्य तो साईबाबा हैं । मुझे 6 जून 1991 वे सपने में आये और उन्होंने मेरी पुस्तक गीता फार आल की प्रति पर अपने हस्ताक्षर करके उसे एप्रूवल दिया ।

आपकी पसंदीदा फिल्में ।

गाइड, मीरा, सिर्डी के साई बाबा ।

प्रिय अभिनेता और अभिनेत्री ।

अभिनेता वाला प्रश्न जरा कठिन है । आप अभिनेत्री की बात करें तो मुझे वहीदा रहमान के अभिनय ने अत्यंत प्रभावित किया ।

कोई पुष्प !
कमल
मनभावन रंग !
कमल का जो रंग है वही प्रिय है ।
जीवन में आनंद के क्षण कौन से रहे ?
सत्य साई बाबा के आश्रम में उनके साथ बिताये गये क्षण ।
दुखद व हताशा के क्षण ?
हमारे विभाग के एक अधिकारी ने आत्महत्या कर ली और मुझ पर यह दोषारोपण किया गया कि इसके लिये मैं जिम्मेदार हूँ । यह मिथ्या दोषारोपण मेरे लिये बड़ा पीड़ादायक था । पिताजी और माताजी के स्वर्गवार पर भी दुखी हुआ ।
आपका सपना ।
मैं चाहता हूँ कि वेदों के ज्ञान को आत्मसात् करूं । और वेदों का ज्ञान पूरी दुनिया में पहुंचे । इस प्थ्वी पर बड़ी भीड़ भाड़ है । मेरा सपना है कि एक और पृथवी बने और उस पर दूसरा जीवन शुरू हो ।